Dharam Shiksha

Q.No.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	TOTAL
MARKS obtained																										
Q.No.	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	80
MARKS obtained																										

Q. NO.		Marks Obtained
	उत्तर	
	खंड - क	
उ01.	विष - बुद्धि ✓ (1)	
उ02.	महाराज रन्तिदेव ✓ (1)	
उ03.	शास्त्रों में चार प्रकार के कर्म बताए गए हैं। (1)	
उ04.	योग के आठ अंग हैं। ✓ (1)	
उ05.	भक्त अगर प्रभु के ज्ञान का अधिकारी हो जाए तो वह होश में आ सकता है। ✓ (1)	

उ06. सत्यार्थ प्रकाश में चौदह (14) समुल्लास हैं। (1)
उ07. डॉ. मेहरचन्द्र महाजन का जन्म हिमाचल प्रदेश में हुआ। (1)
उ09. ब्रह्मचर्य आश्रम जीवन रूपी भवन की नींव के समान है। (1)
उ10. मनुष्य की जाति गुण-कर्म-स्वभावानुसार व मेरिट के आधार पर निश्चित होती है। (1)
उ08. मेहर चंद महाजन के पिता का नाम बृजलाल था। (1)

खंड-ख

उ011. वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म-स्वभावानुसार होती है, जन्म से नहीं। जन्म से सभी शूद्र होते हैं परंतु विद्या और संस्कार के आधार पर हम द्विज बनते हैं। द्विज का अर्थ है दूसरी बार जन्म लेना। जो द्विज बनते हैं उन्हें उनके कर्मों के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य कह दिया जाता है और जो द्विज नहीं बन पाते वह शूद्र कहलाए जाते हैं। (2)

उ012. नहीं, भगवा वस्त्र धारण करने से कोई संन्यासी नहीं बन जाता। संन्यासी उसे ही कहा जा सकता है जिसका हृदय द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, लालसा, छल आदि दुर्गुणों से मुक्त हो। संन्यासी हमेशा वेद पर विचार व धर्म का प्रचार करते हैं। (2)

उ०13 1) महात्मा हंसराज
2) पं. राजाराम

(2)

उ०14 भक्त भगवान से शर्म अपने द्वारा किए गए पाप कर्मों के कारण महसूस कर रहा है।

(2)

उ०15 ओउम् नाम प्राप्त कर लेने से मनुष्य की ऐसी निष्ठा बन जाती है कि वह सारे कामों को छोड़कर ओउम् नाम के जप में मग्न हो जाता है।

(2)

खंड - ग

उ०16 (ओंकार एवेदं सर्वम्) अर्थात जो कुछ भी है वह ओउम् है। जो पहले था, जो है और जो आगे होगा वह ओउम्/ओंकार ही है। जब भी यह पूरी सृष्टि खत्म हो जाएगी तब भी ओउम् जीवित रहेगा।

(3)

उ०17 पितृयज्ञ तीसरा महायज्ञ है। पितृयज्ञ के अन्तर्गत हमें अपने माता-पिता, सास-ससुर, साधु-महात्मा व वृद्धजनों की सेवा करनी चाहिए। सेवा से आशीर्वाद मिलता है। आशीर्वाद से सुख मिलता है, उन्नति होती है। हमें एक भवन बनाना चाहिए व पितरों को बुलाकर सत्संग करना चाहिए व उनकी बातों पर मनन और अमल करना चाहिए। यह भी पितृ यज्ञ का ही ...

(3)

उ०18. विद्यार्थी का तप यही है कि अच्छा खाए, अच्छा सोए व कम से कम समय में अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करे। विद्यार्थी को अपना जीवन सादा, संयमी व अनुशासित जीवन जीना चाहिए। (3)

उ०19. आर्य समाज के द्वारा अविद्या के लिए अनेकों कार्य किए गए हैं। आर्य समाज ने सती-प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह न होना और मूर्ति पूजा को खत्म करने के लिए बहुत परिश्रम किया और वह इसमें सफल भी रहे। आर्य समाज ने लोगों को इन कुरीतियों के खिलाफ जागरूक किया व स्वामी दयानन्द जी ने तो सत्य व विद्या अर्थ के प्रकाश के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' भी लिखी। (3)

उ०20. "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"
अर्थात पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। (3)
पृथ्वी हमारी माता इसलिए है क्योंकि उसने हमें पाला है व रहने की जगह भी दी है। उसकी ममता बिल्कुल माँ की तरह है और उसने ही हमारी माताओं को भी पाला है। पृथ्वी ने हमें वो सुख व साधन दिए हैं जो कि एक माता अपने पुत्र को देती है।

खंड-घ

उ0 21· जिस तरह ईश्वर ने अपनी सविता शक्ति द्वारा, इस सृजन प्रकृति को प्रेरणा देकर पृथ्वी की रचना की है उसी तरह हर उपासक जो ईश्वर को सविता नाम से पुकारता है उसके यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने आप को तथा दूसरों को प्रेरणा देकर अविद्या की निद्रा को दूर करे और सबको ईश्वर भक्त, देश भक्त व जनता-जनार्दन का सेवक बनाने का यत्न करे। (5)

उ0 22 गृहस्थाश्रम को सबसे ऊँचा और श्रेष्ठ इसलिए माना जाता है क्योंकि इसी आश्रम के द्वारा बाकी तीनों आश्रमों की आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं। गृहस्थी में सिर्फ बच्चों का पालन-पोषण ही नहीं होता साथ ही साथ परिवार, समाज व राष्ट्र की भी मदद की जाती है जिस कारण हम सब उन्नति करते हैं। गृहस्थी में वस्तुओं का उत्पादन होता है व पूरे राज्य या राष्ट्र में यह सब चीजें पहुँचाई जाती हैं, न्याय व्यवस्था बनी रहती है जिस कारण सबका कल्याण व विकास होता है। (5)

उ0 24 तीसरे समुल्लास में अध्ययन-अध्यापन के बारे में लिखा गया है। इस समुल्लास में बताया गया है कि, जो विद्यार्थी अपनी पुस्तकों का अध्ययन-अध्यापन करता रहता है वही विद्यार्थी अच्छे अंक लाता है व सफल भी होता है। इस समुल्लास में यह भी लिखा है कि शूद्रों और महिलाओं को भी शिक्षा प्राप्त करने का बराबर का अधिकार है। स्वामीजी के अनुसार वही देश सौभाग्यवान बनता है जिस देश में ब्रह्मचर्य, विद्या व वेद-धर्म का यथायोग्य प्रचार किया जाए। (5)

उ०25. डॉ. मेहरचंद महाजन के कारण ही आज डी.ए.वी. संस्था जीवित है। अगर महाजन साहब नहीं होते तो शायद डी.ए.वी. सिर्फ पाकिस्तान में होता और शायद बंद पड़ा होता। मेहरचंद जी की वजह से ही आज डी.ए.वी सबसे बड़ी गैर-सरकारी संस्था है। आज़ादी के समय डी.ए.वी. विद्यालय व कॉलेज सिर्फ पाकिस्तान में ही थे जिस कारणवश हो सकता था कि भारत में कोई भी डी.ए.वी. संस्था न होती। परंतु महाजन जी की दूरदृष्टि ने ऐसा होने से बचा लिया, उन्होंने अपने नेताओं को जालन्धर डी.ए.वी को दिल्ली स्थित करने का आदेश दिया और साथ ही साथ जब वह कश्मीर के प्रधानमंत्री बने थे तो उन्होंने कुछ जमीन डी.ए.वी के नाम कर दी थी जिस कारणवश आज जम्मू-कश्मीर में भी डी.ए.वी स्थित है वरना हो सकता था कि कोई भी डी.ए.वी. संस्था कश्मीर में न होती।

खंड - ङ

उ०26. स्वाध्याय का अर्थ है स्व-अध्ययन तथा आत्मा और मन का निरीक्षण। गायत्री का जप, ओ३म् का जप व वेद और उपनिषदों का पाठ स्वाध्याय कहलाता है। अपने जीवन में घट रही घटनाओं पर नज़र रखना व मैं कहाँ जा रहा हूँ, मैं यह कार्य क्यों कर रहा हूँ आदि ऐसे सवाल स्वयं से पूछना भी स्वाध्याय कहलाता है।

मन से स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति पापों से बचा रहता है, कभी पराधीन नहीं होता तथा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता चला जाता है और स्वयं अपना

(5)

परम चिकित्सक बन जाता है।

उ०24 सभी वर्णों में ब्राह्मण को समाज रूपी शरीर का मुख बताया गया है क्योंकि हमारी पाँचों इन्द्रियाँ (ज्ञानेन्द्रि) मुख पर स्थित हैं। पूरा शरीर इन इन्द्रियों का लाभ उठाता है उसी प्रकार जो लोग समाज में ज्ञान-प्रधान हैं व अपना ज्ञान समाज व दूसरों की उन्नति के लिए करते हैं, वह ब्राह्मण कहे जाने योग्य हैं। हमारा पूरा शरीर वस्त्रों से ढका होता है, सिर्फ मुख के अलावा इस कारणवश मुख को, सर्दी-गर्मी, धूप-छाया सब सहन करना पड़ता है। उसी प्रकार ब्राह्मण बनने के लिए, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान, धूप-छाया सब सहना पड़ता है। मुख पूरे शरीर में सबसे ऊपर होता है उसी प्रकार ब्राह्मण को भी समाज में सबसे ज्यादा सम्मान मिलता है। (5)

उ०25 1) सातवाँ - सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
2) नौवाँ - प्रत्येक को अपनी उन्नति में ही संतुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। (5)

उ०26 1) मित्र - जो सबका मित्र हो, सबसे स्नेह करे।
2) विष्णु - चर और अचर जगत में व्यापक।
3) शिव - सबका कल्याण करने वाला।
4) ब्रह्मा - इस सृष्टि को रचकर बताने वाला।

(5)

उ० ३० डी.ए.वी. संस्था की जब स्थापना हुई तो अंग्रेज़ों का राज कायम था। अंग्रेज़ों ने हिंदुस्तानियों के दिमाग में यह भर दिया था कि अगर पढ़ेंगे तो सिर्फ़ अंग्रेज़ी के माध्यम से। जो विद्यालय अंग्रेज़ चला रहे थे न तो उनमें वैदिक शिक्षा दी जाती थी न ही भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ बताया जाता था। उन विद्यालयों में सिर्फ़ किताबी कीड़े उत्पन्न हो रहे थे व वह लोग सिर्फ़ नाम के ही भारतीय रह गए थे क्योंकि वह काम, विचार आदि सब अंग्रेज़ों की तरह ही कर रहे थे। इसी कारणवश डी.ए.वी. को अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालय खोलने के लिए विवश होना पड़ा। डी.ए.वी. ने सिर्फ़ अंग्रेज़ी ही नहीं पढ़ाई परंतु वैदिक व धर्म शिक्षा भी प्रदान की व भारतीय लोग पैदा किए। (5)

खंड-घ

उ० २२ ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला व्यक्ति शारीरिक, आत्मिक व मानसिक शक्ति के कारण प्रभु को पाने में समर्थ रहता। व्यक्ति समाज को अपने व्यवहार व सोच के अनुकूल बना लेता है। सबसे बड़ा लाभ तो यह होता है कि ऐसे मनुष्य के समाज में होने के कारण मर्यादा एवं अनुशासन बना रहता है। ब्रह्मचर्य के पालन से शरीर सुंदर और स्वस्थ, मन साफ़ और संतुलित तथा बुद्धि तीव्र और प्रखर बनी रहती है। (4)